B.A I (Hons) II Paper B 26.4.0.20

## ईश्वर और विश्व का सम्बन्ध

विश्व और ईश्वर का सम्बन्ध एकेश्वरवादी सिद्धान्त है जो ईश्वर को एक अनन्त और व्यक्तित्व पूर्ण मानता है और विश्व का अन्तिम आधार स्वीकार करता है। विश्व ईश्वर पर पूर्णतः आश्रित है। ईश्वर से अलग कोई उसकी सत्ता सम्भव नहीं है। ईश्वर विश्वव्यापी और विश्वातीत दोनों है।

ईश्वरवाद का सिद्धान्त ईश्वर को व्यक्तित्व पूर्ण मानता है। उसका कहना है कि व्यक्तित्व पूर्ण ईश्वर ही हमारी धार्मिक भावना को संतुष्ट कर सकती है। धार्मिक सम्बन्ध उपासक और उपास्य का है। ईश्वर उपास्य है और व्यक्ति उपासक। उपास्य में उपासक के प्रति दया और उपासक में उपास्य के प्रति भक्ति और श्रद्धा का होना आवश्यक है और ऐसा सम्बन्ध व्यक्तित्व पूर्ण ईश्वर से सम्भव ही हो सकता है।

एकेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर विश्व में व्याप्त है विश्व का निर्माण ईश्वर के द्वारा ही सम्भव है एक प्रसिद्ध निर्माता (शिल्पी) का

कहना है कि ईश्वरवाद का उद्देश्य मनुष्य आत्मिक प्रकृति की संतुष्टि के लिए होता है।

## ईश्वरवाद का उदाहरण

भारतीय और पाश्चात्य दोनों दर्शन में मिलता है। पाश्चात्य दर्शन में इसके प्रमुख नाम डेकार्ट, बर्कले इत्यादि का है। इनके अनुसार ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है और विश्व का स्रष्टा है। ईश्वर विश्व का आधार है। मनुष्य के लिए ईश्वर आवश्यक है और ईश्वर के लिए मनुष्य। भारतीय विचारकों में रामानुज और निम्बार्क आदि इसके प्रमुख हैं। रामानुज के अनुसार ईश्वर ही एक मात्र परमार्थ सत्ता है। वह अनन्त ज्ञान और शुभ गुणों से युक्त है। ईश्वर विश्व का उपादान और निमित्त दोनों कारण है।

रामानुज की तरह निम्बार्क का कहना है कि ईश्वर प्रत्येक तथा पूर्ण स्वतन्त्र नहीं है ईश्वर सभी प्रकार के कल्याणकारी गुणों से युक्त है ईश्वरवादी दार्शनिकों का कहना है कि ईश्वर विश्व में व्याप्त है। विश्व की उत्पत्ति ईश्वर की प्रेरणा से ही सम्भव है। ईश्वरवाद यह स्वीकार करता है कि ईश्वर कल्याणकारी भावना है। वह ईश्वर मनुष्य के प्रति उदार और करुणामयी है।